# आई.आई.टी. तकनीकी शिक्षा के प्रतिमान

पी. बालाराम

बंगाल के मिदनापुर ज़िले में हिजली डिटेन्शन कैम्प वह जगह थी जहां दो निशस्त्र कैदियों, तारकेश्वर सेनगुप्ता और संतोष मित्रा को पुलिस ने 16 सितम्बर, 1931 के दिन मार डाला था। उनके शव सुभाष चन्द्र बोस ने प्राप्त किए थे। भारत की आज़ादी की लड़ाई का यह एक भावभीना क्षण था।

1946 में आज़ादी की पूर्व बेला में नलिनी रंजन सरकार समिति भारत के 'युद्धोपरांत विकास के लिए उच्च तकनीकी शिक्षा संस्थान' स्थापित करने पर विचार करने को गठित हुई थी। सरकार समिति ने देश के विभिन्न इलाकों में चार राष्ट्रीय संस्थानों का विचार रखा। प्रस्ताव यह था कि ये संस्थान पश्चिम के सर्वोत्तम संस्थानों की तर्ज़ पर बनाए जाएं। स्नातक स्तर पर बढ़िया स्टैंडर्ड के लिए समिति ने मेनचेस्टर और मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी (एम.आई.टी.) को चुना। आज के संदर्भ में देखें तो मानक के रूप में मेनचेस्टर का चयन थोड़ा अजीब लगता है; एम.आई.टी. को लेकर शायद ही किसी को आपत्ति हो। आई.आई.टी. का जन्म सरकार समिति की सिफारिश से हुआ और इनमें से पहला संस्थान खड़गपुर में मई 1950 में अस्तित्व में आया। सितम्बर 1950 में यह आई.आई.टी. हिजली डिटेन्शन कैम्प के अपने वर्तमान परिसर में पहुंच गया।

आई.आई.टी. का तंत्र 1950 के उत्तरार्ध और 1960 के पूर्वार्ध में तेज़ी से फैला। बम्बई (1958), मद्रास (1959), कानपुर (1963) और दिल्ली (1963) में विदेशी सहायता से आई.आई.टी. की स्थापना हुई। इनकी प्रकृति पर सम्बंधित विदेशी सहयोगी की स्पष्ट छाप पड़ी। समय के साथ आई.आई.टी. का अपना ही एक चरित्र उभरा और इसने भारत की इंजीनियरिंग शिक्षा का नज़ारा ही बदल दिया। आई.आई.टी. प्रयोग की सफलता के चलते गौहाटी और रुड़की में भी आई.आई.टी. की स्थापना की गई है। गौहाटी तो पूरी तरह नया संस्थान है मगर रुड़की में एक मौजूदा विश्वविद्यालय को ही आई.आई.टी. में बनाया गया है।

आई.आई.टी. खड़गपुर ने 2001 में अपनी स्वर्ण जयंती मनाई। मगर एकजुटता का प्रशंसनीय प्रदर्शन करते हुए आई.आई.टी. के पूर्व छात्रों ने खड़गपुर आई.आई.टी. के पचास कामयाब वर्षों का जश्न उत्तरी कैलिफोर्निया में सिलिकॉन वैली में मनाया। यह विडम्बना ही है कि आई.आई.टी. प्रयोग की सफलता का पहला जश्न दूर कैलिफोर्निया में हुआ जहां अधिकांश सफल पूर्व छात्र रहते हैं। इस अवसर पर बिल गेट्स ने आई.आई.टी. की शैक्षणिक साख पर अपनी मुहर लगाई और सी.बी.एस. टेलीविज़न नेटवर्क ने पूरे 60 मिनट के कार्यक्रम में आई.आई.टी. को प्रस्तुत किया। कुछ लोग शायद भारत के प्रथम तकनीकी संस्थान के इस जश्न पर थोड़े व्यग्र होंगे। उन्हें यह जानकर शायद थोड़ा सुकून मिलेगा कि आई.आई.टी. के 50 साल पूरा होने का एक जश्न वहां के पूर्व छात्रों ने बैंगलोर में फरवरी 2003 में मनाया। इस अवसर पर 'राष्ट्र निर्माण में आई.आई.टी. की भूमिका' पर एक सेमीनार भी आयोजित किया गया। इस सेमीनार में चर्चा की शुरुआत आई.आई.टी. के उन पूर्व छात्रों ने की जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं - उद्योग, राजनीति और शिक्षा व अनुसंधान। अलबत्ता, उन पूर्व छात्रों के बारे में ज़्यादा चर्चा नहीं हुई जो पर्यावरण आंदोलन वगैरह सामाजिक सरोकारों से जुड़े हैं। इस संदर्भ में अनिल अग्रवाल का नाम गिनाया जा सकता है। एक पूर्व छात्र के रूप में मैं भी इस अवसर पर शामिल हुआ था। वैसे मुझे लगता है कि इस बारे में मेरे विचार थोड़े अलग हैं कि आई.आई.टी. क्या रहे हैं और क्या होना चाहिए।

आई.आई.टी. की विश्वव्यापी छवि निश्चित तौर पर उसके उन पूर्व छात्रों की सफलता पर टिकी है जिन्होंने इंजीनियरिंग के विभिन्न विषयों में स्नातक उपाधि प्राप्त की